CBSE Test Paper 04
Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   फादर को याद करना एक उदास शान्त संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गम्भीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो, हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारु की छाया में खड़े हों।

   i. उत्सव और संस्कार में फादर किसकी भूमिका निभाते थे?
   ii. फादर से बात करने पर कैसी अनुभूति होती थी?
   iii. करुणा के निर्मल जल में स्नान करने का क्या आशय है?

2. लेखक की दृष्टि में फ़ादर का जीवन किस प्रकार का था?

3. फ़ादर कामिल बुल्के कितने समय तक भारत में रहे और कितनी उम्र में हम सभी को छोड़कर विदा हो गए? उन्होंने भारत में कहाँ पर रहकर अपना प्रसिद्ध'अंग्रेजी-हिन्दी-कोश' तैयार किया था?

4. लेखक ने फ़ादर बुल्के को मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है?

5. फ़ादर कामिल बुल्के के अभिन्न भारतीय मित्र का नाम पठित पाठ के आधार पर लिखिये तथा बताइये कि उनकी परस्पर अभिन्नता का कौन-सा तथ्य प्रस्तुत पाठ में परिलक्षित हुआ है?

6. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छायी जैसी क्यों लगती थी?

CBSE Test Paper 04

Ch-4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

Answer

1. i. फादर उत्सव और संस्कार में बड़े भाई और पुरोहित की भूमिका निभाते थे।
   ii. फादर से बात करने पर सबको अपने कर्तव्य-बोध की अनुभूति होती थी और उन्हें अच्छे कर्म करने की प्रेरणा की मिलती थी।
   iii. करुणा के निर्मल जल में स्नान करने का आशय यह है कि फादर का मन करुणा और अच्छाइयों से परिपूर्ण हैं जो मनुष्य को भी अच्छाइयों की ओर प्रेरित करता है ।

2. लेखक की दृष्टि में फादर संन्यासी होते हुए भी बहुत आत्मीय स्नेही और अपनत्व और ममत्व से भरे हुए थे | वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे | उनके मुख पर करुणा के शांतिदायक भाव विराजमान रहते थे। दुःख और तकलीफ के क्षणों में उनके मुख से निकले हुए सांत्वना भरे दो शब्द व्यक्ति को असीम शांति प्रदान करते थे |

3. 47 वर्षों तकफादर कामिल बुल्के भारत में रहे। 73 वर्ष की उम्र में हम सभी को छोड़कर वे संसार से विदा हो गए। राँची के कॉलेज में हिंदी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने पहले अंग्रेजी-हिन्दी-कोश की रचना की।

4. फादर बुल्के मानवीय गुणों से लबरेज़ थे | उनके मन में मानव के प्रति कल्याण, अपनत्व, ममत्व और करुणा की भावना थी | अपनी सहृदयता के कारण ही वे सबके प्रिय थे | वात्सल्यता का सागर तो उनकी नीली आँखों में तैरता रहता था | उनके हाथ सदैव दूसरों को आशीर्वाद देने के लिए उठते थे | संकट के समय वे अपने प्रियजन को इस प्रकार सांत्वना देते थे कि वह सारा दुःख भूलकर शांतचित्त हो जाता था | इन्हीं कारणों से लेखक ने फादर को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' कहा है |

5. फादर कामिल बुल्के के अभिन्न भारतीय मित्र का नाम डॉ रघुवंश था | वे हिंदी के उद्भट विद्वान थे | फादर की उनसे बहुत घनिष्ठता थी | अपनी माताजी के लिखे हुए पत्र फादर रघुवंश जी को दिखाते थे और अपने घर की सभी बातें उन्हें बताते थे |

6. फ़ादर बुल्के की उपस्थिति देवदारु की छाया जैसी इसलिए लगती हैं क्योंकि वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ते बनाकर रखते थे,सबके घरों में उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति को उनसे स्नेह और ममता मिलती थी। दूसरों के लिए उनकी नीली आँखों में सदा वात्सल्य तैरता रहता था।